सूचीपत्र शब्दों का

शब्द		पृष्ट
अब मेरे सतगुर ...	..	४५
अमृत नीका कहै सब कोई	...	४८
आदि अनादि मेरा साँई	...	३५
आदि अंत मेरा है राम		३७
ऐ		
ऐसे साधू करम दहै		४६
क		
कहा कहूँ मेरे पिउ .	..	४६
च		
चल चल रे हंस राम सिंध		३८
चल सूवा तेरे आद राज	.	३९
ज		
जा के उर उपजी नहिं भाई		३६
जीव बटाऊ रे बहता भाई	..	४१
जो धुनियाँ तौ भी मैं राम तुम्हारा ...		३६
जो सुमिरूं तो पूरन राम	.	३५
द		
दरिया दरबारा ...	.	५१
दुनियाँ भरम भूल बौराई		४०
न		
नाम बिन भाव करम नहिं छूटै		४०

शब्द		पृष्ठ
प		
पतिव्रता पति मिली है लाग	...	३७
ब		
बाबल कैसे बिसरा जाई	...	४२
म		
मुरली कौन बजावै हो	...	४५
मैं तोहि कैसे बिसरूं देवा	.	४१
र		
राम नाम नहिं हिरदे धारा	...	५०
राम भरोसा राखिये	...	४७
स		
सतगुर से सब्द ले	..	५०
सब जग सोता सुध नहिं पावे	..	२१
साधो अरट बहै घट माहीं	..	४८
साधो अलख निरंजन सोई	...	४[illegible]
साधो एक अचंभा दीठा	...	४४
साधो ऐसी खेती करई	...	४२
साधो मेरे सतगुरु भेद बताया	...	४[illegible]
साधो राम अनूरम बानी	...	४[illegible]
साधो हरि पद कठिन कहानी	...	५[illegible]
साहब मेरे राम हैं	...	४[illegible]
संतो कहा गृहस्त कहा त्यागी	...	४[illegible]
ह		
है कोइ संत राम अनुरागी	...	४[illegible]

सूचीपत्र अंगों का

		पृष्ठ
सतगुर का अंग	..	१—५
सुमिरन का अंग	..	५—९
बिरह का अंग	...	९
सूर का अंग ...	...	१०—१३
नाद परचे का अंग	...	१३—१५
[illegible] परचे का अंग	...	१६—१८

		पृष्ठ
साध का अंग ..	...	२२—[illegible]
चितामनि का अंग	...	२[illegible]
अपारख का अंग	...	२३—२[illegible]
उपदेश का अंग	...	२४—[illegible]
पारस का अंग	...	२६—[illegible]

दरिया साहब (मारवाड़ वाले)

का

जीवन-चरित्र

—:৪:—

दरिया साहब ने मारवाड़ के जैतारन नामक गाँव में भादों वदी अष्टमी संवत् १७३३ (विक्रमी) के दिन एक मुसलमान कुल में जन्म लिया और अगहन सुदी पूनों संवत् १८१५ को ८२ बरस से अधिक अवस्था में परलोक को सिधारे। उस समय महाराज बख्तसिंह जी मारवाड़ के राजा थे। दरिया साहब के बाप मा जाति के धुनियाँ थे जैसा कि उन्होंने एक पद में कहा है।

जो धुनियाँ तौ भी मैं राम तुम्हारा।
अधम कमीन जाति मतिहीना,
तुम तो हौ सिर ताज हमारा।

दरिया साहब की सात ही बरस की उमर मे उनके पिता का देहान्त हुआ जिस से उसी देश के रैन नामक गाँव, परगना मेड़ता में अपने नाना के घर जाकर रहे। नाना का नाम कमीच था।

कहते हैं कि महाराज बख्तसिंह जी को एक असाध रोग था जिसका इलाज करते ते वह हार गये। आखिर भाग्य से दरिया साहब के आश्रम पर रैन गाँव में जा कर नता से विनती की जिस पर दरिया साहब ने दया करके अपने गुरमुख चेले सुखरामदास के द्वारा उन को उपदेश दिया और राजा आरोग्य हो गये। सुखरामदास जी जाति के कलीगर लोहार थे जिन का स्थान रैन में अब तक मौजूद है जहाँ हर बरस मेला ता है।

दरिया साहब के गुरु प्रेमजी थे जो बीकानेर के गाँव खियान्सर मे रहते थे।

मारवाड़ (राजपूताना) में दरिया साहब के मत के हजारों आदमी है। दरिया पंथियों विश्वास के अनुसार नीचे लिखा हुआ दोहा महात्मा दादू साहब ने दरिया साहब के लेने से एक सौ बरस पहले कहा था—

देह पड़ताँ दादू कहै, सौ बरसाँ इक संत।
रैन नगर में परगटै, तारै जीव अनंत॥

यह दरिया साहब उन दरिया साहब से बिलकुल निराले हैं जो बिहार प्रांत में डुमराँव के पास के धरकंधा नामक गाँव में इसी समय में बिराजमान थे और जिन का देहांत होना १०६ बरस की उमर में संवत् १८३७ में पाया जाता है। इस हिसाब से मारवाड़ वाले दरिया साहब बिहार वाले दरिया साहब के दो बरस पीछे पैदा हुए और २२ बरस पहले गुप्त हुए। इन दोनों महात्माओं की बानी और इष्ट के नाम में इतना भेद है कि दोनों कदापि एक नहीं ठहर सकते। पर यह अनूठी बात है कि दोनों महात्मा नीच जाति के मुसलमानी माता के पेट से जन्मे (क्योंकि मारवाड़ वाले महात्मा की माँ धुनियाइन थी और बिहार वाले की दर्जिन) दोनों महात्मा का नाम एक ही था, दोनों शब्द-मार्गी थे और एक ही समय में बयासी बरस तक रहे, यद्यपि अलग-अलग देशों में एक दूसरे से बहुत दूर पर। बिहार के दरिया साहब के पंथ वाले दूसरे दरिया साहब के पन्थ वालों से गिनती में अधिक हैं; उन की बानी भी जो ऊँचे घाट की और अति मनोहर है हमको मिली है जो उनके जीवन-चरित्र के साथ छपी है।

मारवाड़ वाले दरिया साहब की बानी और जीवन-चरित्र हम को लाला शंकरलाल साहब बी० ए० सेक्रेटरी सर्दार रिसाला जोधपुर की सहायता से मिले जिसके लिये हम उनको हृदय से धन्यवाद देते हैं।

संत रचन की रज, अधम,
संतबानीपुस्तक-माला-कार्यालय
बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग।

दरिया साहब (मारवाड़) की बानी

सतगुर का अंग

नमो राम परब्रह्म जी, सतगुर संत अधारि।
जन दरिया बंदन करै, पल पल वारूं वारि ॥१॥

नमो नमो हरि गुरु नमो, नमो नमो सब संत।
जन दरिया बंदन करै, नमो नमो भगवंत ॥२॥

दरिया सतगुर भेंटिया, जा दिन जन्म सनाथ।
स्रवनाँ सब्द सुनाय के, मस्तक दीना हाथ ॥३॥

सतगुर दाता मुक्ति का, दरिया प्रेम दयाल।
किरपा कर चरनों लिया, मेटा सकल जँजाल ॥४॥

अंतर थो बहु जन्म को, सतगुर भाँग्यो[1] आय।
दरिया पति से रूठनो, अब कर प्रीति बनाय ॥५॥

जन दरिया हरि भक्ति की, गुराँ बताई बाट।
भूला ऊजड़ जाय था, नरक पड़न के घाट ॥६॥

दरिया सतगुर सब्द सौं, मिट गई खैंचा तान।
भरम अंधेरा मिट गया, परसा पद निरबान ॥७॥

दरिया सतगुर सब्द की, लागी चोट सुठौर।
चंचल सों निस्चल भया, मिट गइ मन की दौड़ ॥८॥

डूबत रहा भव सिंध में, लोभ मोह की धार।
दरिया गुरु तैरू मिला, कर दिया पैले पार[2] ॥९॥

दरिया गुरु गरुवा मिला, कर्म किया सब रद्द।
झूठा भर्म छुड़ाय कर, पकड़ाया सत सब्द ॥१०॥

---

(१) मिटा दिया। (२) पल्ले पार।

दरिया मिरतक देख कर, सतगुर कीनी रीझ।
नाम सजीवन मोहिं दिया, तीन लोक को बीज ॥११॥

तीन लोक को बीज है, ररो ममो दोइ अंक।
दरिया तन मन अर्प के, पीछे होय निसंक ॥१२॥

जन दरिया गुरदेव जी, सब बिधि दई बताय।
जो चाहो निज धाम को, सो साँस उसाँसो ध्याय ॥१३॥

जन दरिया सतगुर मिला, कोई पुरबले पुन्न।
जड़ पलट चेतन किया, आन मिलाया सुन्न ॥१४॥

दरिया सतगुर सब्द सौं, गत मत पलटै अंग।
कर्म काल मन का मिटा, हरि भज भये सुरंग ॥१५॥

नहिं था राम रहीम का, मैं मतहीन अजान।
दरिया सुध बुध ज्ञान दे, सतगुर किया सुजान ॥१६॥

सोता था बहु जन्म का, सतगुर दिया जगाय।
जन दरिया गुर सब्द सौं, सब दुख गये बिलाय ॥१७॥

सतगुर सब्दाँ मिट गया, दरिया संसय सोग।
औषद दे हरि नाम का, तन मन किया निरोग ॥१८॥

दरिया सतगुर कृपा करि, सब्द लगाया एक।
लागतही चेतन भया, नेत्तर खुला अनेक ॥१९॥

दरिया गुरु पूरा मिला, नाम दिखाया नूर।
निसा[1] भई सुख ऊपजा, किया निसाना दूर ॥२०॥

रंजी[2] सास्तर ज्ञान की, अंग रही लिपटाय।
सतगुर एकहि सब्द से, दीन्ही तुरत उड़ाय ॥२१॥

सब्द गहा सुख ऊपजा, गया अंदेसा मोहि।
सतगुर ने किरपा करी, खिड़की दीनी खोहि[3] ॥२२॥

(१) तसल्ली। (२) रज। (३) खोल।

जैसे सतगुर तुम करी, मुझ से कछू न होय।
बिष भाँड़े बिष काढ़ कर, दिया अमीरस मोय ॥२३॥
गुरु आये घन गरज कर, अंतर कृपा उपाय।
तपता से सीतल किया, सोता लिया जगाय ॥२४॥
गुरु आये घन गरज कर, सब्द किया परकास।
बीज पड़ा था भूमि में, भई फूल फल आस ॥२५॥
गुरु आये घन गरज कर, करम कड़ी सब खेर[1]।
भरम बीज सब भूनिया, ऊग न सक्के फेर ॥२६॥
साध सुधारै सिष्य को, दे दे अपना अंग।
दरिया संगत कीट की, पलटि सो भया भिरंग ॥२७॥
यह दरिया की बीनती, तुम सेती महराज।
तुम भृंगी मैं कीट हूँ, मेरी तुमको लाज ॥२८॥
बिक्ख छुड़ावैं चाह कर, अमृत देवैं हाथ।
जन दरिया नित कीजिये, उन संतन को साथ ॥२९॥
उन संतन के साथ से, जिवड़ा पावै जक्ख[2]।
दरिया ऐसे साध के, चित चरनों ही रक्ख ॥३०॥
बाड़ी में है नागरी[3], पान देसांतर जाय।
जो वहँ सूखै बेलड़ी, तौ पान वहाँ बिनसाय ॥३१॥
पान बेल से बीछुड़ै, परदेसाँ रस देत।
जन दरिया हरिया रहै, उस हरी बेल के हेत ॥३२॥
कुंझी[4] परदेसों फिरै, अंड धरै घर माहिं।
निस दिन राखै हेत में, ता सों बिनसै नाहिं ॥३३॥
अलल[5] अंड को डाल दे, अंतर राखै हेत।
पाक[6] फूट पर पक होवै, (जब) खैंच आप ढिग लेत ॥३४॥

---

(१) मिटाकर। (२) चैन। (३) नागर बेल। (४) एक चिड़िया का नाम (कुंज)।
(५) एक चिड़िया का नाम (अलल पच्छ)। (६) पक कर।

अलख बसै आकास में, नीची सुरत निवास।
ऐसे साधू जगत में, सुरत सिखर पिउ पास ॥३५॥
कोयल आले मूढ़[1] के, धरै आपना अंड।
निस दिन राखै हेत में, तिन से पड़ै न खंड ॥३६॥
मूढ़ काग समझै नहीं, मोह माया सेवै।
चून चुगावै कोयली, अपना कर लेवै ॥३७॥
चौमासे ऋतु जान कर, पिरथी को जल देत।
कबहूं आवै ऋतु बिना, उस चात्रिक के हेत ॥३८॥
घरहर बरषै आय कर, देख पपीहा चाव।
जिम दरिया सतगुर चवै[2], देख साँहिला[3] भाव ॥३९॥
महा प्रताप सिर पर तपै, किरपा रस पीऊँ।
दरिया बच्चा कच्छ गुरु, जोये ही[4] जीऊँ ॥४०॥
जन दरिया गुरदेव जी, ऐसे किया निहाल।
जैसे सूखी बेलड़ी, बरस किया हरियाल ॥४१॥
सतगुर सा दाता नहीं, नहिं नाम सरीखा[5] देव।
सिष सुमिरन साँचा करै, हो जाय अलख अभेव ॥४२॥
जन दरिया सतगुर करी, राम नाम की रीझ।
अमृत वूठा[6] सब्द का, ऊगा पूरब बीज ॥४३॥
सतगुर बरषै सब्द जल, पर उपकार बिचारि।
दरिया सूखी अवनि[7] पर, रहै निवाना[8] वारि[9] ॥४४॥
सतगुर के इक रोम पर, वारूं बेर अनंत।
अमृत ले मुख में दियो, राम नाम निज तंत ॥४५॥
सतगुर वृच्छ समान है, फल से प्रीत न कोय।
फल तरु से लागो रहै, रस पी परिपक होय ॥४६॥

---

(१) कौवा। (२) बरषा करते हैं। (३) अंतर का। (४) ध्यान रखने से। (५) बराबर। (६) बरसा। (७) पृथ्वी। (८) कुआ या बावड़ी। (९) पानी।

सतगुर पारस की कनी, दीरग दीखैं नाहिं।
जन दरिया षट दरब धन, सब आया उन माहिं ॥४७॥
मीन तड़पती जल बिना, (तेहि) सागर माहिं समाय।
जन दरिया ऐसी करी, गुरु किरपा मोहिं आय ॥४८॥
भवजल बहता जात था, संसय मोह की बाढ़।
दरिया मोहिं गुरु कृपा कर, पकड़ बाँह लिया काढ़ ॥४९॥

सुमिरन का अंग

राम भजै गुर सब्द ले, तौ पलटै मन देह।
दरिया छाना[1] क्यों रहै, भू पर बूठा[2] मेंह ॥१॥
दरिया नाम है निरमला, पूरन ब्रह्म अगाध।
कहे सुने सुख ना लहै, सुमिरे पावै स्वाद ॥२॥
दरिया सुमिरै राम को, करम भरम सब खोय।
पूरा गुरु सिर पर तपै, बिघन न लागै कोय ॥३॥
दरिया सुमिरै राम को, कर्म भर्म सब चूर।
निस तारा सहजै मिटै, जो ऊगै निर्मल सूर ॥४॥
राम बिना फीका लगै, सब किरिया सास्तर ज्ञान।
दरिया दीपक कह करै, उदय भया निज भान ॥५॥
दरिया सूरज ऊगिया, नैन खुला भरपूर।
जिन अंधे देखा नहीं, उनसे साहब दूर ॥६॥
दरिया सूरज्ज ऊगिया, चहुं दिस भया उजास।
नाम प्रकासै देह में, तौ सकल भरम का नास ॥७॥
आन धरम दीपक जिसा, भरमत होय बिनास।
दरिया दीपक क्या करै, आगे रवि परकास ॥८॥
दरिया सुमिरै राम को, दूजी आस निवार।
एक आस लागा रहै, तो कधी न आवै हार ॥९॥

दरिया नर तन पाय कर, कीया चाहै काज।
राव रंक दोनों तरैं, जो बैठे नाम जहाज ॥१०॥

नाम जहाज बैठे नहीं, आन करै सिर भार।
दरिया निस्चय बहैंगे, चौरासी की धार ॥११॥

जन्म अकारथ नाम बिन, भावै जान अजान।
जन्म मरन जम काल की, मिटै न खैंचा तान ॥१२॥

मुसलमान हिंदू कहा, षट दरसन रंक राव।
जन दरिया निज नाम बिन, सब पर जम का दाव ॥१३॥

सुर्ग मिर्त पाताल कह, कह तीन लोक बिस्तार।
जन दरिया निज नाम बिन, सभी काल को चार[१] ॥१४॥

दरिया नर तन पाय कर, किया न राम उचार।
बोझ उतारन आइया, सो लिये चले सिर भार ॥१५॥

जो कोइ साधू गृही में, माहिं राम भरपूर।
दरिया कह उस दास की, मैं चरनन की धूर ॥१६॥

बाहर बाना भेष का, माहिं राम का राज।
कह दरिया वे साधवा, हैं मेरे सिर का ताज ॥१७॥

राम सुमिर रामहिं मिला, सो मेरे सिर का मौर।
दरिया भेष बिचारिये, खैर मैर को ठौर ॥१८॥

दरिया सुमिरै राम को, कोटि कर्म की हान।
जम और काल का भय मिटै, ना काहू की कान ॥१९॥

दरिया सुमिरै राम को, आतम को आधार।
काया काँची काँच सी, कंचन होत न बार ॥२०॥

दरिया राम सँभालते, काया कंचन सार।
आन धर्म और भर्म सब, डाला सिर से भार ॥२१॥

---

(१) चारा।

दरिया सुमिरै राम को, सहज तिमिर का नास ।
घट भीतर होय चाँदना, परम जोति परकास ॥२२॥
सतगुर संग न संचरा, राम नाम उर नाहिं ।
ते घट मरघट सारिखा, भूत बसै ता माहिं ॥२३॥
राम नाम ध्याया नहीं, हूआ बहुत अकाज ।
दरिया काया नगर में, पंच भूत का राज ॥२४॥
पंच भूत के राज में, सब जग लागा धुंध ।
जन दरिया सतगुर बिना, मिल रहा अंधा अंध ॥२५॥
सब जग अंधा राम बिन, सूझि न काज अकाज ।
राव रंक अंधा सबै, अंधों ही का राज ॥२६॥
दरिया सब जग आँधरा, सूझै सो बेकाम ।
सूझा तबही जानिये, ता को दरसै राम ॥२७॥
मन बच काया समेट कर, सुमिरै आतम राम ।
दरिया नेड़ा नीपजै[1], जाय बसै निज धाम ॥२८॥
सकल ग्रंथ का अर्थ है, सकल बात की बात ।
दरिया सुमिरन राम का, कर लीजै दिन रात ॥२९॥
भू लोक भू राम कह, कहै पताला सेस ।
दरिया परघट नाम बिन, कहु कौन आयो देख ॥३०॥
लोह पलट कंचन भया, कर पारस को संग ।
दरिया परसै नाम को, सहजहिं पलटै अंग ॥३१॥
अपने अपने इष्ट में, राच रहा सब कोय ।
दरिया रत्ता राम सूं, साधसिरोमन सोय ॥३२॥
दरिया धन वे साधवा, रहैं राम लौ लाय ।
राम नाम बिन जीव सो, काल निरंतर खाय ॥३३॥

---

(१) पैदा हो ।

दरिया काया कारवी[1], मौसर है दिन चार।
जब लग साँस सरीर में, तब लग राम सँभार ॥३४॥
राम नाम रसना रटै, भीतर सुमिरै मन।
दरिया ये गत साध की, पाया नाम रतन ॥३५॥
दरिया दूजे धर्म से, संसय मिटै न सूल।
राम नाम रटता रहै, सर्ब धर्म का मूल ॥३६॥
लख चौरासी भुगत कर, मानुष देह पाई।
राम नाम ध्याया नहीं, तो चौरासी आई ॥३७॥
दरिया नाके नाम के, बिरला आवै कोय।
जो आवै तो परम पद, आवागवन न होय ॥३८॥
दरिया राम अगाध है, आतम का आधार।
सुमिरत ही सुख ऊपजै, सहजहि मिटै बिकार ॥३९॥
दरिया राम संभालता, देख किता गुन होय।
आवागवन का दुख मिटै, ब्रह्म परायन सोय ॥४०॥
मरना है रहना नहीं, जा में फेर न सार।
जन दरिया भय मान कर, आपन राम सँभार ॥४१॥
कहा कोई बन बन फिरै, कहा लियाँ कोइ फौज।
जन दरिया निज नाम बिन, दिन दस मन की मौज ॥४२॥
दरिया आतम मल भरा, कैसे निर्मल होय।
सावन लावै प्रेम का, राम नाम जल धोय ॥४३॥
दरिया इस संसार में, सुखी एक है संत।
पिये सुधारस प्रेम से, राम नाम निज तंत ॥४४॥
राम नाम निस दिन रटै, दूजा नाहीं दाँय।
दरिया ऐसे साध की, मैं बलिहारी जाँय ॥४५॥

(१) कृशी।

दरिया सुमिरन राम का, देखत भूती खेल ।
धन धन हैं वे साधवा, जिन लीया मन मेल ॥४६॥
दरिया सुमिरन राम का, कीमत लखै न कोय !
टुक इक घट में संचरै, पाव बस्तु मन होय ॥४७॥
दरिया सुमिरै राम को, साकित नाहिं सुहात ।
बीज चमक्के गगन में, गधिया बावै[1] लात ॥४८॥
फिरी दुहाई सहर में, चोर गये सब भाज ।
सत्रू फिर मित्रज भया, हुआ राम का राज ॥४९॥
जो कुछ थी सोही बनी, मिट गइ खैंचा तान ।
चोर पलट कर साह मै, फिरी राम की आन ॥५०॥

बिरह का अंग

दरिया हर किरपा करी, बिरहा दिया पठाय ।
यह बिरहा मेरे साध को, सोता लिया जगाय ॥१॥
बिरह बियापी देह में, किया निरंतर बास ।
तालाबेली जीव में, सिसके साँस उसाँस ॥२॥
कहा हाल तेरे दास का, निस दिन दुख में जाहि ।
पिव सेती परचो नहीं, बिरह सतावे माँहि ॥२॥
दरिया बिरही साध का, तन पीला मन सूख ।
रैन न आवै नींदड़ी, दिवस न लागै भूख ॥३॥
बिरहन पिउ के कारने, ढूंढ़न बन खँड जाय ।
निस बीती पिउ ना मिला, दरद रहा लिपटाय ॥५॥
बिरहन का घर बिरह में, ता घट लोहु न मास ।
अपने साहब कारने, सिसके साँसो साँस ॥६॥

---

(१) चलावै ।

सूर का अंग

इष्टी स्वाँगी बहु मिले, हिरसी मिले अनंत।
दरिया ऐसा ना मिला, राम रता कोइ संत ॥१॥
पंडित ज्ञानी बहु मिले, बेद ज्ञान परबीन।
दरिया ऐसा ना मिला, राम नाम लवलीन ॥२॥
बक्ता स्रोता बहु मिले, करत्ते खैंचा तान।
दरिया ऐसा ना मिला, जो सन्मुख झेले बान ॥३॥
दरिया बान गुरदेव का, बेधै भरम बिकार।
बाहर घाव दीखै नहीं, भीतर भया सिमार[1] ॥४॥
दरिया बान गुरदेव का, कोइ झेलै सूर सधीर।
लागत ही ब्यापै सही, रोम रोम में पीर ॥५॥
सोई घाव तन पर लगै, उट्ठ सँभालै साज।
चोट सहारे सब्द की, सो सूरा सिरताज ॥६॥
चोट सहै उर सेल की, मुख ज्यों का त्यों नूर।
चोट सहारै सब्द की, दरिया साँचा सूर ॥७॥
दरिया सूरा गुरमुखी, सहै सब्द का घाव।
लागत ही सुध बीसरे, भूलै आन सुभाव ॥८॥
दरिया साँचा सूरमा, सहै सब्द की चोट।
लागत ही भाजै भरम, निकस जाय सब खोट ॥९॥
दरिया सस्तर बाँध कर, बहुत कहावैं सूर।
सूरा तब ही जानिये, अनी[2] मिले मुख नूर ॥१०॥
सबहि कटक[3] सूरा नहीं, कटक माहिं कोइ सूर।
दरिया पड़े पतंग ज्यों, जब बाजे रन तूर ॥११॥
पड़ पतंगा अगिन में, देह की नाहिं सँभाल।
दरिया सिप सतगुर मिले, तो हो जाय निहाल ॥१२॥

---

(१) मिस्मार, चकनाचूर। (२) नोक, घाव। (३) फौज।

भया उजाला गैब का, दौड़े देख पतंग ।
दरिया आपा मेटकर, मिले अगिन के रंग ॥१३॥
दरिया प्रेमी आतमा, आवै सतगुर संग ।
सतगुर सेती सब्द ले, मिलै सब्द के रंग ॥१४॥
दरिया प्रेमी आतमा, राम नाम धन पाया ।
निरधन था धनवँत हुवा, भूला घर आया ॥१५॥
सूरा खेत बुहारिया, सतगुर के बिस्वास ।
सिर ले सौंपा राम को, नहिं जीवन की आस ॥१६॥
दरिया खेत बुहारिया, चढ़ा दई की गोद ।
कायर काँपै खड़बड़ै, सूरा के मन मोद ॥१७॥
सूर बीर साँची दसा, भीतर साँचा सूत ।
पूठ[1] फिरै नहिं मुख मुड़ै, राम तना रजपूत ॥१८॥
साध सूर का एक अंग, मना न भावै झूठ ।
साध न छाँड़ै राम को, रन में फिरै न पूठ ॥१९॥
सूर बीर की सभा में, कायर बैठे आय ।
सूरातन आवै नहीं, कोटि भाँति समुझाय ॥२०॥
सूर बीर की सभा में, जो कोइ बैठे सूर ।
सुनत बात सुख ऊपजै, चढ़ै सवाया नूर ॥२१॥
आगे बढ़ै फिरै नहीं, यह सूरा की रीत ।
तन मन अरपै राम को, सदा रहै अघ जीत ॥२२॥
सूर न जानै कायरी, सूरातन से हेत ।
पुरजा पुरजा हो पड़ै, तहू न छाँड़ै खेत ॥२३॥
सूर सदा है सनमुखी, मन में नाहीं संक ।
आपा अरपै राम को, तो बाल न होवै बंक ॥२४॥

(१) पाठ ।

सूर बीर साँची दसा, कबहु न मानै हार।
अनी मिलै आगे घसै, सनमुख झेलै सार[1] ॥२५॥
सूरा के सिर साम[2] है, साधों के सिर राम।
दूजी दिस ताकैं नहीं, पड़ै जो करड़ा काम ॥२६॥
सूर चढ़ै संग्राम को, मन में संक न कोय।
आपा अरपै राम को, मन में संक न कोय ॥२७॥
सूरा खेत बुहारिया, भरम मनी कर चूर।
आय बिराजा राम जी, दुर्जन भाजा दूर ॥२८॥
पीछे पाँव धरै नहीं, सूरा बड़ा सुभाव।
हूँ करिया आगे घसै, कायर खेलै दाँव ॥२९॥
साध सुरग चाहै नहीं, नरकाँ दिस नहिं जाय।
पारब्रह्म के पार लग, पटा गैब का खाय ॥३०॥
पटा पत्रड़िया[3] ना लहै, पटा लहै कोइ सूर।
साखियाँ साहब ना मिलै, भजन किये भरपूर ॥३१॥
दरिया सुमिरन राम का, सूराँ हंदा साज।
आगे पीछे होय नहीं, वाहि धनी की लाज ॥३२॥
दरिया सो सूरा नहीं, जिन देह करी चकचूर।
मन को जीत खड़ा रहै, मैं बलिहारी सूर ॥३३॥
सिंधु[4] बजा सूरा भिड़ा, विरद[5] बखानै भाट।
हला मेरु[6] धूजी धरा, खुली सुरग की बाट ॥३४॥
बाट खुली जब जानिये, अंतर भया उजास।
जो कुछ थी सो ही बनी, पूरी मन की आस ॥३५॥
दरिया साँचा सूरमा, अरि दल[7] घालै चूर।
राज थरपिया[8] राम का, नगर बसा भरपूर ॥३६॥

---

(१) तोड़ा। (२) हथियार का नाम। (३) दरबान। (४) फौजी बाजा। (५) तारीफ। (६) पहाड़। (७) दुश्मन की फौज। (८) थापा।

सूर बीर सनमुख सदा, एक राम का दास।
जीवन मरन थित मेटकर, किया ब्रह्म में बास ॥३७॥
कायागढ़ ऊपर चढ़ा, परसा पद निर्बान।
ब्रह्म राज निरभय भया, अनहद घुरा निसान ॥३८॥

नाद परचे का अंग

दरिया सुमिरै राम को, आठ पहर आराध।
रसना में रस ऊपजे, मिसरी के से स्वाद ॥१॥
रसना सेती ऊतरा, हिरदे कीया बास।
दरिया बरषा प्रेम की, षट ऋतु बारह मास ॥२॥
दरिया हिरदे राम से, जो कभु लागे मन्न।
लहरें उट्ठें प्रेम की, ज्यों सावन बरषा घन ॥३॥
जन दरिया हिरदा बिचे, हुआ ज्ञान परकास।
हौद भरा जहँ प्रेम का, तहँ लेत हिलोरा दास ॥४॥
हिरदै सेती ऊतरै, सुखम प्रेम की लहर।
नाभि कँवल में संचरै, सहज भरीजे डहर[1] ॥५॥
नाभि कँवल के भीतरे, भँवर करत गुंजार।
रूप न रेख न बरन है, ऐसा अगम बिचार ॥६॥
नाभी परचा ऊपजै, मिट जाय सभी बिबाद।
किरनैं छूटैं प्रेम की, देखै अगम अगाध ॥७॥
नाभि कँवल से ऊतरा, मेरु डंड तल आय।
खिड़की खोली नाद की, मिला ब्रह्म से जाय ॥८॥
दरिया चढ़िया गगन को, मेरु उलंघ्या[2] डंड।
सुख उपज़ा साँई मिला, भेंटा ब्रह्म अखंड ॥९॥
बंकनाल की सुध गहै, मेरु डंड की बाट।
दरिया चढ़िया गगन को, लाँघ्या औघट घाट ॥१०॥

---

(१) रास्ता, तराई। (२) लाँघ गया।

दरिया मेरु उलंघ कर, पहुँचा त्रिकुटी सन्ध ।
दुख भाजा सुख ऊपजा, मिटा भर्म का धुन्ध ॥११॥
अनंतहि चंद्र ऊगिया, सूर्य कोटि परकास ।
बिन बादल बरषा घनी, छह ऋतु बारह मास ॥१२॥
बंक नाल की सुध गहै, कोइ पहुँचै बिरला सन्त ।
अमी झिरै जोत झिलमिलै, नौबत घुरै अनन्त ॥१३॥
दरिया मन परमन भया, बैठा त्रिकुटी छाजे ।
अमी झिरै बिगसै कँवल, अनहद धुन गाजे ॥१४॥
दरिया त्रिकुटी सन्ध में, मन ध्यान धरै कर धीर ।
अवस चलत है सुषमना, चलत प्रेम की सीर ॥१५॥
चलै सुरसरी[1] अगम की, हिरदे मंझ समाय ।
जन दरिया वा सुषमना, रोम रोम हो जाय ॥१६॥
दरिया नाद प्रकासिया, सो छबि कही न जाय ।
धन्य धन्य वे साधवा, वहाँ रहे लौ लाय ॥१७॥
दरिया नाद प्रकासिया, पूरी मन की आस ।
घन बरसै गाजै गगन, तेज पुंज परकास ॥१८॥
दरिया नाद प्रकासिया, [तहँ] किया निरंतर बास ।
पारब्रह्म परसा सही, जहँ दरसन पावै दास ॥१९॥
जन दरिया जाय गगन में, परसा देव अनाद ।
असुध बीसरी सुध भई, मिटिया वाद विबाद ॥२०॥
घुरै नगारा गगन में, बाजै अनहद तूर ।
जन दरिया जहँ थिति रची, निस दिन बरसै नूर ॥२१॥
जन दरिया जाय गगन में, किया सुधा रस पान ।
गंग बहै जहँ अगम की, जाय किया असनान ॥२२॥

---

(१) गंगा ।

अमी झरत बिगसत कँवल, उपजत अनुभव ज्ञान ।
जन दरिया उस देस का, भिन भिन करत बखान ॥२३॥
सुरत गगन में बैठ कर, पति का ध्यान सँजोय ।
नाड़ि नाड़ि रूँ रूँ बिषे[1], ररंकार धुन होय ॥२४॥
बिन पावक पावक जलै, बिन सूरज परकास ।
चाँद बिना जहँ चाँदना, जन दरिया का बास ॥२५॥
नौबत बाजै गगन में, बिन बादल घन गाज ।
महल बिराजैं परम गुरु, दरिया के महराज ॥२६॥
कंचन का गिर देख कर, लोभी भया उदास ।
जन दरिया थाके बनिज, पूरी मन की आस ॥२७॥
ब्रह्म अगिन ऊपर जलै, चलत प्रेम की बाय ।
दरिया सीतल आतमा, [जाका] कर्म कंद[2] जल जाय ॥२८॥
कहा कहै किरपा करी, कहै रहै कोइ रूठ ।
जन दरिया बानक[3] बना, राम ठगोरी पूठ[4] ॥२९॥
दरिया त्रिकुटी महल में, भई उदासी मोय ।
जहँ सुख है तहँ दुख सही, रबि जहँ रजनी होय ॥३०॥
दरिया मन रंजन कहे, सुखी होत सब कोय ।
मीठे औगुन ऊपजै, कड़ुवा से गुन होय ॥३१॥
मीठे राचै लोग सब, मीठे उपजै रोग ।
निरगुन कड़ुवा नीम सा, दरिया दुर्लभ जोग ॥३२॥
त्रिकुटी के मँझ बहत है, सुख की सलिता जोर ।
जन दरिया सुख दुख परे, वह कोइ देस जो और ॥३३॥
त्रिकुटी माहीं सुख घना, नाहीं दुख का लेस ।
जन दरिया सुख दुख नहीं, वह कोइ अनुभवि देस ॥३४॥

---

(१) में । (२) प्रची, जड़ । (३) संजोग । (४) पीठ ठोका ।

ब्रह्म परचे का अंग

दरिया त्रिकुटी संधि में, महा जुद्ध रन पूर।
कायर जन पूठा फिरै, सुन पहुँचै कोइ सूर ॥१॥
दरिया मेरु उलंघिया, त्रिकुटी बैठा जाय।
जो वहँ से पूठा फिरै, तो विषयों का रस खाय ॥२॥
दरिया मन निज मन भया, त्रिकुटी मंझ समाय।
जो वहँ से पाछे फिरै, तो मन का मन हो जाय ॥३॥
दरिया देखे दोय पख, त्रिकुटी संधि मँझार।
निराकार एकै दिसा, एकै दिसा आकार ॥४॥
निराकार आकार बिच, दरिया त्रिकुटी संधि।
परे अस्थान जो सुरत का, उरे सो मन का बंध ॥५॥
मन बुध चित हंकार की, है त्रिकुटी लग दौड़।
जन दरिया इनके परे, ब्रह्म सुरत की ठौर ॥६॥
मन बुध चित हंकार यह, रहैं अपनी हद माहिं।
आगे पूरन ब्रह्म है, सो इनकी गम नाहिं ॥७॥
मन बुध चित हंकार के, सुरत सिरोमन जान।
ब्रह्म सरोवर सुरत के, दरिया संत प्रमान ॥८॥
मन बुध चित हंकार यह, रहैं सुरत के माहिं।
सुरत मिली जाय ब्रह्म में, जहँ कोइ दूजा नाहिं ॥९॥
मन मेरू[1] से बावड़ै[2], त्रिकुटी लग ओंकार।
जन दरिया इनके परे, ररंकार निरधार ॥१०॥
दरिया त्रिकुटी हद लग, कोइ पहुँचै संत सयान।
आगे अनहद ब्रह्म है, निराधार निरबान ॥११॥
दरिया त्रिकुटी के परे, अनहद ब्रह्म अलेख।
जहाँ सुरत गैली[3] भई, अनुभव पद को देख ॥१२॥

---

(१) पहाड़। (२) लौट आवे। (३) हैरान।

रतन अमोलक परख कर, रहा जौहरी थाक ।
दरिया तहँ कीमत नहीं, उनमुन भया अबाक[१] ॥१३॥

इड़ा पिंगला सुषमना, त्रिकुटी सन्धि मँझार ।
दरिया पूरन ब्रह्म के, यह भी उलटी वार ॥१४॥

सुरत उलट आठों पहर, करत ब्रह्म आराध ।
दरिया तबही देखिये, लागी सुन्न समाध ॥१५॥

सुरत ब्रह्म का ध्यान धर, जाय ब्रह्म में पर्स ।
जन दरिया जहँ एकसा, दिवस एक सौ बर्स ॥१६॥

ररंकार धुन हौद में, गरक[२] भया कोइ दास ।
जन दरिया ब्यापै नहीं, नींद भूख और प्यास ॥१७॥

जन दरिया आकास लग, ओंकार का राज ।
महासुन्न तिस के परे, ररंकार महराज ॥१८॥

दरिया सुरति सिरोमनी, मिलि ब्रह्म सरोवर जाय ।
जहँ तीनों पहुँचें नहीं, मनसा बाचा काय ॥१९॥

काया अगोचर मन्न अगोचर, सब्द अगोचर सोय ।
जन दरिया लवलीन होय, पहुँचैगा जन कोय ॥२०॥

धरती गगन पवन नहिं पानी, पावक चंद न सूर ।
रात दिवस की गम नहीं, जहँ ब्रह्म रहा भरपूर ॥२१॥

ररंकार सतगुर बरम्ह, दरिया चेला सुर्त ।
जैसे मिल तैसा भया, ज्यौं संचे[३] माहीं भर्त[४] ॥२२॥

दरिया सूरति सर्पनी, चढ़ी ब्रह्म के माँय ।
जाय मिली परब्रह्म से, निरभय रही समाय ॥२३॥

दरिया देखत ब्रह्म को, सुरत भई भयभीत ।
तेज पुंज रवि अगिन बिन, जहँ कोइ उष्न न सीत ॥२४॥

(१) चुप । (२) डूब जाना । (३) साँचा । (४) ताँबा और सीसा से मिल कर बनी हुई धात ।

पाप पुन्न सुख दुख नहीं, जहँ कोइ कर्म न काल।
जन दरिया जहँ पड़त है, हीरों की टकसाल ॥२५॥
सुरत निरत परचा भया, अरस परस मिलि एक।
जन दरिया बानक[1] बना, मिट गया जन्म अनेक ॥२६॥
तज बिकार आकार तज, निराकार को ध्याय।
निराकार में पैठकर, निराधार लौ लाय ॥२७॥
सुरत मिली जाय ब्रह्म से, अपनो इष्ट सँभाल।
जन दरिया अनुभौ सबद, जहँ दीखै काल बिसाल ॥२८॥
सुरत मिली जाय ब्रह्म से, मन बुध को दे पूठ।
जन दरिया जहँ देखिये, कथनी बदनी झूठ ॥२९॥
दरिया जहँ लग गगन है, तहँ लग सुरत निवास।
इनके आगे सुन्न है, जहँ प्रेम भाव परकास ॥३०॥
दरिया अनहद अगिन का, अनुभौ धूवाँ जान।
दूरा सेती देखिये, परसे होय पिछान ॥३१॥
मान बड़ा अनुभौ सबद, दूर देसाँतर जाय।
अनहद मेरा साइयाँ, घट में रहा समाय ॥३२॥
प्रथम ध्यान अनुभौ करै, जा से उपजै ज्ञान।
दरिया बहुते करत हैं, कथनी में गुजरान ॥३३॥
अनुभौ झूठी थोथरी, निर्गुन सच्चा नाम।
परम जोत परचै भई, तो धूवाँ से क्या काम ॥३४॥
आँखों से दीखै नहीं, सब्द न पावै जान।
मन बुध तहँ पहुँचै नहीं, कौन कहै सेलान[2] ॥३५॥
भाव मिलै परभाव से, धर कर ध्यान अखंड।
दरिया देखै ब्रह्म को, न्यारा दीखै पिंड ॥३६॥

---

(१) औसर। (२) निशान।

भाव करम सुख दुख नहीं, नहिं कोइ पुन्न न पाप।
दरिया देखै सुन्न चढ़, जहँ आपहि उर रहा आप ॥३७॥
अगम दरीचा अगम घर, जहँ कोइ रूप न रेख।
जहँ दरिया दुबिधा नहीं, स्वामी सेवक एक ॥३८॥
सुन्न मँडल में परघटा, प्रेम कथा परकास।
बकता देव निरंजना, स्रोता दरियादास ॥३९॥
पंछी ऊड़ै गगन में, खोज[1] मँडै[2] नहिं माहिं।
दरिया जल में मीन गति, मारग दरसै नाहिं ॥४०॥
मन बुध चित पहुँचै नहीं, सब्द सकै नहिं जाय।
दरिया धन वे साधवा, जहाँ रहे लौ लाय ॥४१॥
दरिया सुन्न समाध की, महिमा घनी अनंत।
पहुँचा सोई जानसी, कोइ कोइ बिरला संत ॥४२॥
एक एक को ध्याय कर, एक एक आराध।
एक एक से मिल रहे, जाका नाम समाध ॥४३॥
भाव मिले परभाव से, परभाये पर भाय।
दरिया मिलकर मिल रहै, तो आवा गवन नसाय ॥४४॥
पाँच तत्त गुन तीन से, आतम भया उदास।
सरगुन निरगुन से मिला, चौथे पद में बास ॥४५॥
माया तहाँ न संचरै, जहाँ ब्रह्म का खेल।
जन दरिया कैसे बनै, रवि रजनी का मेल ॥४६॥
जीव जात से बीछुड़ा, धर पंच तत्त का भेख।
दरिया निज घर आइया, पाया ब्रह्म अलेख ॥४७॥
जात हमारी ब्रह्म है, मात पिता है राम।
गिरह हमारा सुन्न में, अनहद में बिसराम ॥४८॥

---

(१) निशान। (२) पड़ता।

हंस उदास का अंग

कबहुक भरिया समुंद सा, कबहुक नाहीं छाँट[1]।
जन दरिया इत उत रता, ते कहिये किरकाँट[2] ॥१॥
किरकाँटा किस काम का, पलट करै बहु रंग।
जन दरिया हंसा भला, जद तद एकै रंग ॥२॥
एक रंग उलटी दसा, भीतर भरम न भाल।
जन दरिया निज दास का, तन मन मता मराल[3] ॥३॥
दरिया हंसा ऊजला, बगुलहु उज्जल होय।
दोनों एकहि सारिषा, पर चेजै[4] पारष[5] जोय ॥४॥
दरिया बगुला ऊजला, उज्जल ही होय हंस।
वे सरवर मोती चुगैं, वा के मुख में मंस ॥५॥
वा का चेजा[4] ऊजला, वा का खाज निषेद।
जन दरिया कैसे बनै, हंस बगुल के भेद ॥६॥
जन दरिया हंसा तना[6], देख बड़ा ब्यौहार।
तन उज्जल मन ऊजला, उज्जल लेत अहार ॥७॥
वाहर से उज्जल दसा, भीतर मैला अंग।
ता सेती कौवा भला, तन मन एकहि रंग ॥८॥
वाहर से उज्जल दसा, अंतर उज्जल होय।
दरिया सोना सोल्हवाँ[7], काँट[8] न लागै कोय ॥९॥
मानसरवर मोती चुगै, दूजा नाहीं खान।
दरिया सुमिरै राम को, सो निज हंसा जान ॥१०॥
मानसरोवर वासिया, छीलर[9] रहै उदास।
जन दरिया भज राम को, जब लग पिंजर साँस ॥११॥

---

(१) छींटा। (२) गिरगिट। (३) हस। (४) चुगा यानी खुराक। (५) परीक्षा। (६) का। (७) खरा। (८) जग। (९) तलैया।

सुपने का अंग

दरिया सोता सकल जग, जागत नाहीं कोय ।
जागे में फिर जागना, जागा कहिये सोय ॥१॥
साध जगावे जीव को, मत[1] कोइ उट्ठे जाग ।
जागे फिर सोवै नहीं, जन दरिया बड़ भाग ॥२॥
माया मुख जागे सबै, सो सूता कर जान ।
दरिया जागै ब्रह्म दिस, सो जागा परमान ॥३॥
दरिया तो साँची कहै, झूठ न मानै कोय ।
सब जग सुपना नींद में, जान्या जागन होय ॥४॥
साँख जोग नवधा भगति, यह सुपने की रीत ।
दरिया जागै गुरुमुखी, [जा?ी] तत्त नाम से प्रीत ॥५॥
दरिया सतगुर कृपा कर, सब्द लगाया एक ।
जागत ही चेतन भया, नेतर खुला अनेक ॥६॥

॥ राग भैरव ॥

सब जग सोता सुध नहिं पावै, बोलै सो सोता बरड़ावै ॥टेक॥
संसय मोह भरम की रैन, अंध धुंध होय सोते अैन ॥१॥
जप तप सँजम औ आचार, यह सब सुपने के ब्योहार ॥२॥
तीर्थ दान जग प्रतिमा सेवा, यह सब सुपना लेवा देवा ॥३॥
कहना सुनना हार औ जीत, पछा पछी सुपनो बिपरीत ॥४॥
चार बरन और आस्रम चार, सुपना अंतर सब ब्योहार ॥५॥
खट दरसन आदि भेद भाव, सुपना अंतर सब दरसाव ॥६॥
राजा राना तप बलवंता, सुपना माहीं सब बरतंता ॥७॥
पीर औलिया सबै सयाना, ख्वाब माहिं बरतै बिध नाना ॥८॥
काजी सैयद औ सुलताना, ख्वाब माहिं सब करत पयाना ॥९॥
साँख जोग औ नौधा भक्ती, सुपना में इनकी इक बिरती ॥१०॥

(१) कदाचित ।

काया कसनी दया औ धर्म, सुपने सुर्ग औ बंधन कर्म ॥११॥
काम क्रोध हत्या पर नास, सुपना माहीं नर्क निवास ॥१२॥
आदि भवानी संकर देवा, यह सब सुपना लेवा देवा ॥१३॥
ब्रह्मा बिस्नू दस औतार, सुपना अंतर सब ब्योहार ॥१४॥
उद्भिज्ज सेतज जेरज अंडा, सुपन रूप बरतै ब्रह्मंडा ॥१५॥
उपजै बरतै अरु बिनसावै, सुपने अंतर सब दरसावै ॥१६॥
त्याग ग्रहन सुपना ब्योहारा, जो जागा सो सब से न्यारा ॥१७॥
जो कोइ साध जागिया चावै, सो सतगुर के सरनै आवै ॥१८॥
कृत कृत बिरला जाग न भागो, गुरमुख चेत सब्द मुख जागो॥१६॥
संसय मोह भरम निस नाम, आतम राम सहज परकास ॥२०॥
राम सँभाल सहज धर ध्यान, पाछे सहज प्रकासै ज्ञान ॥२१॥
जन दरियाव सोई बड़ भागो, जा का सुरत ब्रह्म सँग जागो ॥२२॥

साध का अंग

दरिया लच्छन साध का, क्या गिरही क्या भेख।
निःकपटी निरसंक रहि, बाहर भीतर एक ॥१॥

सतगुर को परसा नहीं, सीखा सब्द सुहेत।
दरिया कैसे नीपजै, तेह-बिहूना[1] खेत ॥२॥

सत्त सब्द सत गुरमुखी, मत गजंद[2] मुख दंत।
यह तो तोड़ै पौल गढ़, वह तोड़ै करम अनंत ॥३॥

दाँत रहे हस्ती बिना, तो पौल न टूटै कोय।
कै कर धारै कामिनी, कै खेलाराँ[3] होय ॥४॥

साध कह्यो भगवंत कह्यो, कहै ग्रंथ और वेद।
दरिया लहै न गुरु बिना, तत्त नाम का भेद ॥५॥

---

(१) बिना तर किया हुआ। (२) हाथी। (३) खिलौना।

राजा बाँटै परगना, जो गढ़ का पति होय।
सतगुरु बाँटै राम रस, पीवै बिरला कोय ॥६॥
मतबादी जानै नहीं, ततबादी की बात।
सूरज ऊगा उल्लुवा, गिनै अँधारी रात ॥७॥
भीतर अँधारी भीत सी, बाहर ऊगा भान।
जन दरिया कारज कहा, भीतर बहुली हान ॥८॥
सीखत ज्ञानी ज्ञान गम, करै ब्रह्म की बात।
दरिया बाहर चाँदना, भीतर काली रात ॥९॥
बाहर कुछ समझै नहीं, जस रात अँधेरी होत।
जन दरिया भय कुछ नहीं, जो भीतर जागै जोत ॥१०॥

चिंतामनि का अंग

चिंतामन चौकस चढ़ी, सही रंक के हाथ।
ना काहू के सँग मिलै, ना काहू से बात ॥१॥
दरिया चिंतामनि रतन, धस्यो स्वान पै जाय।
स्वान सूंघ कानें[1] भया, वह टूका ही चाय ॥२॥
दरिया हीरा सहस दस, लख मन कंचन होय।
चिंतामनि एकै भला, ता सम तुलै न कोय ॥३॥

अपारख का अंग

हीरा हलाहल[2] क्रोड़ का, जा का कौड़ी मोल।
जन दरिया कीमत बिना, बरतै डाँवाँडोल ॥१॥
हीरा लेकर जौहरी, गया गँवारे देस।
देखा जिन कंकर कहा, भीतर परख न लेस ॥२॥
दरिया हीरा क्रोड़ का, [जाकी] कीमत लखै न कोय।
जबर मिलै कोइ जौहरी, तबही पारख होय ॥३॥

---

(१) किनारा। (२) बिलकुल।

आइ पारख चेदन भया, मन दे लीना मोल।
गाँठ बाँध भीतर धमा, मिट गइ डाँवाँडोल ॥४॥
कंकर बाँधा गाँठड़ी, कर हीरा का भाव।
खाला कंकर नीसरा, झूठा यही सुभाव ॥५॥

उपदेश का अंग

जन दरिया उपदेस दे, जा के भीतर चाय।
नातर गैला[1] जगत से, बक बक मरै बलाय ॥१॥
दरिया बहु बकवाद तज, कर अनहद से नेह।
औंधा कलसा ऊपरे, कहा बरसावै मेह ॥२॥
बिरही प्रेमी मोम-दिल, जन दरिया निःकाम।
आसिक दिल दीदार का, जासे कहिये राम ॥३॥
जन दरिया उपदेस दे, [जाके] भीतर प्रेम सधीर।
गाहक होय कोइ हींग का, [जाको] कहा दिखावै हीर ॥४॥
दरिया गैला[1] जगत से, समझ ओ मुख से बोल।
नाम रतन की गाँठड़ी, गाहक बिन मत खोल ॥५॥
दरिया गैला जगत को, क्या कीजे समझाय।
चलना है दिस उतर को, दक्खिन दिस को जाय ॥६॥
दरिया गैला जगत को, कैसे दीजै सीख।
सौ कोसाँ चालन करै, चाल न जानै बीख[2] ॥७॥
दरिया गैला जगत को, कैसे दीजै हेत।
जो सौ वेरा छानिये, तौहू रेत की रेत ॥८॥
दरिया गैला जगत को, क्या कीजै सुलझाय।
सुलझाया सुलझै नहीं, फिर सुलझ सुलझ उलझाय ॥९॥
दरिया गैला जगत को, क्या कीजे समझाय।
रोग नीसरे देह में, पत्थर पूजन जाय ॥१०॥

(१) बावला। (२) कदम।

भेड़ गती संसार की, हारे गिनै न हार ।
देखा देखि परबत चढ़ै, देखा देखी खाड़[1] ॥११॥
दरिया सो अंधा बिचै, एक सुझाको जाय ।
वह तो बात देखी कहै, वा के नाहीं दाय[2] ॥१२॥
दरिया सारा[3] अंध को, कहै देख देख कुछ देख ।
अंध कहै सूझै नहीं, कोइ पूरबला लेख ॥१३॥
कंचन कंचन ही सदा, काँच काँच सो काँच ।
दरिया झूठ सो झूठ है, साँच साँच सो साँच ॥१४॥
जन दरिया निज साँच का, साँचा ही ब्योहार ।
झूठ झूठ ही नीवड़ै, जा में फेर न सार ॥१५॥
दरिया साँच न संचरै, जब घर घालै झूठ ।
साँच आन परगट हुआ, जब झूठ दिखावै पूठ ॥१६॥
जन दरिया इस झूठ की, डागल[4] ऊपर दौड़ ।
साँचि दौड़ चौगान में, सो संताँ सिर मौर ॥१७॥
कानों सुनी सो झूठ सब, आँखों देखी साँच ।
दरिया देखे जानिये, यह कंचन यह काँच ॥१८॥
साध पुरुष देखी कहैं, सुनी कहैं नहिं कोय ।
कानों सुनी सो झूठ सब, देखी साँची होय ॥१९॥
दरिया आगे साँच के, झूठ किती इक बात ।
जैसे ऊगे भान के, रात अँधारी जात ॥२०॥
दरिया साँचा राम है, और सकल ही झूठ ।
सनमुख रहिये राम से, दे सबही को पूठ ॥२१॥
दरिया साँचा राम है, फिर साँचा है संत ।
वह तो दाता मुक्ति का, वह मुख नाम कहंत ॥२२॥

(१) गढ़ा । (२) पसंद । (३) निपट । (४) छत ।

दरिया गुरु दरियाव की, साध चहूँ दिस नहर ।
संग रहै सोई पिये, नहिं फिरै तृषाया बहर ॥२३॥
साध सरोवर राम जल, राग द्वेस कुछ नाहिं ।
दरिया पीवै प्रीत कर, सो तिरपत हो जाहि ॥२४॥
जन दरिया गुन गाय ले, बहता अंग सरीर ।
बलिहारी उस अंग की, खैंचा निकसै छीर ॥२५॥
साधू जल का एक अँग, बरतै सहज सुभाव ।
ऊंची दिसा न संचरै, निवन[1] जहाँ ढलकाव ॥२६॥
दरिया नाके पौल के, इक पंछी आवै जाय ।
ऐसे साधू जक्त में, बरतैं सहज सुभाय ॥२७॥
मच्छी पंछी साध का, दरिया मारग नाहिं ।
अपनी इच्छा से चलैं, हुकम धनी के माहिं ॥२८॥
साधू चंदन बावना[2], [जाके] एक राम की आस ।
जन दरिया इक राम बिन, सब जग आक पलास ॥२९॥

पारस का अंग

जन दरिया पट धात का, पारस कीया नाँव ।
परसा सो कंचन भया, एक रंग इक भाव ॥१॥
दरिया छुरी कसाव की, पारस परसै आय ।
लोह पलट कंचन भया, आमिष[3] भखा न जाय ॥२॥
लोह काला भीतर कठिन, पारस परसै सोय ।
उर नरमी अति निरमला, बाहर पीला होय ॥३॥
पारस परसा जानिये, जो उलटै अँग अंग ।
अँग अंग पलटै नहीं, तौ है झूठा संग ॥४॥

---

(१) नीचा । (२) बावना चंदन उस असल चंदन को कहते हैं जिस के पास के दरख्त मलियागिर पर सब सुगंधित हो जाते हैं । (३) माँस ।

पारस जाकर लाइये, जाके अंग में गात[१]।
क्या लावै पाषान को, घस घस होय संताप ॥५॥
दरिया काँटी[२] लोह की, पारस परसै सोय।
धात बस्तु भीतर नहीं, कैसे कंचन होय ॥६॥

भेष का अंग

दरिया काँटी[२] भेष सब, भीतर धात न प्रेम।
कली[३] लगावै कपट की, नाम धरावै हेम[४] ॥१॥
दरिया काँचे दूध का, बानो सो बन जाय।
दूध फाट काँजी भई, तहँ गुन कहाँ समाय ॥२॥
दरिया काँजी भेष है, फाड़ै काँचा दूध।
अड़ँग बड़ँग कर आतमा, मेटै साँची सूध ॥३॥
बारह बाटै बहत है, दरिया जगत औ भेष।
तू बहता सँग मत बहै, रहता साहब देख ॥४॥
दरिया बिल्ली गुरु किया, उज्जल बगु को देख।
जैसे को तैसा मिला, ऐसा जक्त और भेष ॥५॥
चौकी बैठी काल की, दरिया कलु के भेष।
इन सबही को पूठ दे, सनमुख साहिब देख ॥६॥
दरिया संगत भेष की, हुई मिटावै साँट[५]।
परदा घालै राम बिच, करदे बारह बाट ॥७॥
दरिया स्वाँगी भेष का, आगा पाछा[६] अंग।
जैसे कपड़ा पास[७] बिन, लागत नाहीं रंग ॥८॥
दरिया संगी साध का, अंतर प्रेम प्रकास।
राम भजै साँचे मते, दूजे धुंध निकास ॥९॥
पिरथम हम यों जानते, स्वाँग धरै सो साध।
सतगुर से परचा भया, दीसी मोटि बिराध ॥१०॥

---

(१) जौहर। (२) मैल। (३) कलई। (४) सोना। (५) संधि (६) उलटा पलटा। (७) जामन।

दरिया संगी स्वाँग का, जा का बिकल सरीर।
मतलब देखै आप का, नहिं जानै पर पीर ॥११॥
दरिया साध और स्वाँग का, क्रोड़ कोस का बीच।
राम रता साँचा मता, स्वाँग काल की कीच ॥१२॥
दरिया परसै साध को, तो उपजै साँची सीष।
जो कोइ परसै भेष को, ताहि मँगावै भीष ॥१३॥
साध स्वाँग में आँतरा, जैसा दिवस औ रात।
इनके आसा जगत की, उन को राम सुहात ॥१४॥
साध स्वाँग अस आँतरा, जेता झूठ और साँच।
मोती मोती फेर बहु, इक कंचन इक काँच ॥१५॥
साध स्वाँग अस आँतरा, जस कामी निःकाम।
भेष रता ते भीख में, नाम रता ते राम ॥१६॥
भेष बिजूका[1] नाम का, कायर को डरपाय।
दरिया सिंघा ना डरै, जहाँ नाम तहँ जाय ॥१७॥
भेष बिजूका[1] नाम का, देखत डरै कुरंग[2]।
दरिया सिंघा ना डरै, भीतर निर्भय अंग ॥१८॥
तम पर भेष बनाय के, मकर पकड़ भया सूर।
संग लगाया लग रहै, दूर किया होय दूर ॥१९॥
दरिया ऐसा भेष है, जैसा अड़वा[3] खेत।
बाहर चेतन की रहन, भीतर जड़ अचेत ॥२०॥
स्वाँग कहै मैं पेट भराऊँ, डहकाऊँ[4] संसार।
राम नाम जाने बिना, बोरूँ काली धार ॥२१॥
दरिया सब जग आँधरा, सूझ न काज अकाज।
भेष रता अंधा सबै, अंधाई का राज ॥२२॥

---

(१) एक जानवर का नाम जो चौपायों के पेट के अंदर घुस कर माँस खा जाता है। (२) हिरन। (३) काली हाँडी वगैरह जो जानवरों के डराने को खेत में खड़ी कर देते हैं। (४) भटकाऊँ।

माला फेरे क्या भया, मन फाटै कर भार।
दरिया मन को फेरिये, जामें बसे बिकार ॥२३॥
जो मन फेरै राम दिस, कल बिष नासै धोय।
दरिया माला फेरते, लोग दिखावा होय ॥२४॥
कंठी माला काठ की, तिलक गार का होय।
जन दरिया निज नाम बिन, पार न पहुँचे कोय ॥२५॥
पाँच सात साखी कही, पद गाया दस दोय।
दरिया कारज ना सरै, पेट भराई होय ॥२६॥
साँख जोग पपील[1] गति, बिघन पड़ै बहु आय।
बावल[2] लागै गिर पड़ै, मँजिल न पहुँचे जाय ॥२७॥
भक्ती सार बिहंग गति, जहँ इच्छा तहँ जाय।
श्री सतगुर रच्छा करैं, बिघन न ब्यापै ताय ॥२८॥

मिश्रित साखी

दरिया सब जग आँधरा, सूझै सो बेकाम।
भीतर का नेतर खुला, तबही दरसै राम ॥१॥
दरिया सब जग आँधरा, सूझै नहीं लगार[3]।
औषध है सतसंग का, सतगुरु बोवनहार ॥२॥
दरिया गुरु किरपा करी, सब्द लगाया एक।
जागत ही चेतन भया, नेतर खुला अनेक ॥३॥
दरिया भागे भरम सब, पाया राम महबूब।
जाके भान उगै नहीं, दीपक करना खूब ॥४॥
ज्ञान धरम दीपक दसा, भरम तिमर होय तास।
दरिया दीपक क्या करै, [जाके] राम रवी परकास ॥५॥
दरिया सूरज ऊगिया, सब भ्रम गया बिलाय।
उर में गंगा परगटी, सरवर काहे जाय ॥६॥

(१) चीटी। (२) बगूला। (३) पास।

दरिया सूरज ऊगिया, नैन खुला भरपूर।
जिन अंधे देखा नहीं, तिन से साहब दूर ॥७॥

दरिया सूरज ऊगिया, चहुँ दिस भया उजास।
राम प्रकासै देह में, तो सकल भरम का नास ॥८॥

पाय बिसारै राम को, भ्रष्ट होत है सोय।
रबि दीपक दोनों बिना, अंधकार ही होय ॥९॥

पाय बिसारै राम को, बैठा सब ही खोय।
दरिया पड़ै अकास चढ़, राखनहार न कोय ॥१०॥

पाय बिसारै राम को, महा अपराधी सोय।
दरिया तीनों लोक में, इसा न दूजा कोय ॥११॥

पाय बिसारै राम को, तीन लोक तल सोय।
जन दरिया अघ जीव का, दिन दिन दूना होय ॥१२॥

बड़ के बड़ लागै नहीं, बड़ के लागै बीज।
दरिया नान्हा होय कर, राम नाम गह चीज ॥१३॥

रसना अंतर वाहिये[1], लोक लाज सब खोय।
दरिया पानी प्रेम का, सींच सहज बड़ होय ॥१४॥

दरिया तीनों लोक में, देखा दोय बिनान।
गुजरानी गुजरान में, गलतानी गलतान ॥१५॥

गुजरानी गलतान की, दरिया ये पहिचान।
आन रता गुजरान सब, कोइ नाम रता गलतान ॥१६॥

सोई कंथ कबीर का, दादू का महराज।
सब संतन का बालमा, दरिया का सिरताज ॥१७॥

दरिया तीनों लोक में, ढूंढ़ा सबही धाम।
तीर्थ वर्त विधि करत बहु, बिना राम किन काम ॥१८॥

---

(१) जोतिये।

तीन लोक चौदह भवन, दरिया देखा जोय।
राम सरीखा राम है, इसा न दूजा कोय ॥१९॥

तीन लोक चौदह भवन, ढूँढ़ा सबही धाम।
दरिया देखा निरत कर, राम सरीखा राम ॥२०॥

दरिया परछे[1] नाम के, दूजा दिया न जाय।
तन मन आतम वार कर, राखीजे उर माँय ॥२१॥

दरिया सुमिरै राम को, [जाकी] पारख कीजे जाय।
सरवन ढल नेतर ढलै, देह रसना ढल जाय ॥२२॥

दरिया सतगुरु सब्द ले, करै राम संयोग।
ज्ञान खुलै अरबल[2] बढ़ै, देही रहै निरोग ॥२३॥

दरिया प्रेमी आतमा, करै राम का गाढ़।
आवै उबासी चौगुनी, भाजन लागै हाड़ ॥२४॥

कंचन भाजन[3] विष भरा, सो मेरे किस काम।
दरिया बासन सो भला, जा में अमृत राम ॥२५॥

जो काया कंचन मई, रतनों जड़िया चाम।
दरिया कहै किस काम का, जो मुख नाहीं राम ॥२६॥

राम सहित मध्यम भला, गलत कोढ़ होय अंग।
उत्तम कुल को त्याग कर, रहिये उन के संग ॥२७॥

कस्तूरी कूंड़े[4] भरी, मेली ऊँड़े[5] ठाँय।
दरिया छानी[6] क्यों रहै, साख भरै सब गाँय ॥२८॥

कूंड़ा[2] आला[7] चाम का, भीतर भरा कपूर।
दरिया बासन क्या करै, बस्तु दिखावै नूर ॥२९॥

जन दरिया पुन पाप के, थोथे तीराँ जूझ।
करै दिखावा और को, आप समाहै गूझ ॥३०॥

(१) बदले। (२) उमर। (३) बरतन। (४) कुप्पा। (५) गहरा। (६) छिपी। (७) गीला।

पाप पुन्न सुख दुःख की, अरट[१] भरत है साख ।
जन दरिया रह राम लग, वहँ सबही को राख[२] ॥३१॥
जीव बिलंग्या[३] जीव से, कारज सरै न कोय ।
जन दरिया सतगुर मिलै, तो ब्रह्म बिलंबन[४] होय ॥३२॥
जीव बिलंबन झूठ है, मिल मिल बिछुड़ै जाय ।
ब्रह्म बिलंबन साँच है, रह उर माँहि समाय ॥३३॥
सकल आदि सब के परे, है अबिनासी राम ।
उपजै बर्तै बिनसजै[५], माया रूपी काम ॥३४॥
दरिया दस दरवाज में, ता बिच पढ़त निमाज ।
ररो ममो इक रटत है, और सकल बेकाज ॥३५॥
दरिया खेती नीपजी, सिरोपान गया सूख ।
हरियाली मिट कन भया, भीतर भागी भूख ॥३६॥
रवि ससि चालै पूर्व दिस, पच्छिम कहै सब लोय ।
दरिया यह गत साध की, लखै सो बिर्ला कोय ॥३७॥
समुंद खार गंगा गदल, जल गुनवंता सीत ।
रवी तेज ससि छिद्रता, दरिया संतों रीत ॥३८॥
दरिया दीपक राम का, गगन मंडल में जोय ।
तीन लोक चौदह भवन, सहज उजाला होय ॥३९॥
दरिया राजस दूर कर, ररंकार लौ लाय ।
राम छाँड़ राजस गहै, भौ भौ पर ले जाय ॥४०॥
सब्द सुहाया बादसाह, साधन सैना जान ।
सेना सहजै आवसी, जो चढ़ आवै सुलतान ॥४१॥
दरिया लच्छन साध का, क्या गिरही क्या भेष ।
निःकपटी निर्पच्छ रह, बाहर भीतर एक ॥४२॥

---

(१) रहट । (२) बचाव । (३) फँस गया । (४) लेना । (५) नाश हो ।

रहनी करनी साध की, एक राम का ध्यान।
बाहर मिलता सो मिलै, भीतर आतम ज्ञान ॥४३॥

तरवर छाना[1] फल नहीं, पिरथी से बनराय।
सतगुरु छाना सिष नहीं, दूर देसंतर जाय ॥४४॥

दरिया संगत साध की, सहजै पलटै बंस।
कीट छाँड़ मुक्ता चुगै, होय काग से हंस ॥४५॥

साँची संगत साध की, जो कर जानै कोय।
दरिया ऐमी सो करै, [जेहि] कारज करना होय ॥४६॥

दरिया संगत साध की, सहजै पलटै अंग।
जैसे संग मजीठ के, कपड़ा होय सुरंग ॥४७॥

दरिया संगत साध की, कल बिष नासै धोय।
कपटी की संगत किये, आपहु कपटी होय ॥४८॥

सतगुरु को परसा नहीं, सुमिरा नाहीं राम।
ते नर पसू समान हैं, साँस लेत बेकाम ॥४९॥

माया माया सब कहै, चीन्है नाहीं कोय।
जन दरिया निज नाम बिन, सबही माया होय ॥५०॥

गिरह माहिं धंधा घना, भेष माहिं हलकान[2]।
जन दरिया कैसे भजूं, पूरन ब्रह्म निशान ॥५१॥

फूलों में फल मान कर, भली बिभूती जाय।
अति सीतल सुगंधिता, नवधा भक्ति उपाय ॥५२॥

फूलों में फल मान कर, जाय बिभूती येह।
ता से तो मनुवाँ भला, सकल त्याग फल लेह ॥५३॥

दरिया धन बहुता मिला, तू नहिं जानत मोहिं।
ता से नैनन रहित है, साँच कहत हूँ तोहिं ॥५४॥

---

(१) छिपा हुआ। (२) परेशानी।

जन दरिया अँग साध का, सीतल बचन सरीर।
निर्मल दसा कमोदिनी, मिले मिटावै पीर ॥५५॥

संकट पड़ै जब साध को, सब संतन के सोग।
दरिया सहाय करैं हरी, परचे मानैं लोग ॥५६॥

बातों में ही बह गया, निकस गया दिन रात।
मुहलत अब पूरी भई, आन पड़ी जम घात ॥५७॥

दरिया औषध राम रस, पीये होत समाध।
महा रोग जीवन मरन, तेहि की लगै न व्याध ॥५८॥

दरिया निरगुन राम है, सरगुन सतगुर देव।
यह सुमिरावैं राम को, वो है अलष अभेव ॥५९॥

जारी गावै कृस्न की, हड्डी जरावै सीत।
दरिया कैसे जानिहै, राम नाम की रीत ॥६०॥

दरिया अमल[1] है आसुरी, पिये होय सैतान।
राम रसायन जो पिये, सदा छाक[2] गलतान ॥६१॥

नारी आवै प्रीत कर, सतगुर परसै आन।
दरिया हित उपदेस दे, माय बहिन धी जान ॥६२॥

नारी जननी जगत की, पाल पोस दे पोष।
मूरख राम बिसार कर, ताहि लगावै दोष ॥६३॥

ररा तो रब आप है, ममा मोहम्मद जान।
दोय हरफ में माइना[3], सबही वेद पुरान ॥६४॥

ररंकार अनहद्द की, दरिया परख अवाज।
और इष्ट पहुँचे नहीं, जहाँ राम का राज ॥६५॥

सिव ब्रह्मा और बिस्नु का, येही उरे मँडान।
जन दरिया इनके परे, निरंजन का नीसान ॥६६॥

---

(१) नशा। (२) मस्त। (३) अर्थ।

दरिया देही गुरमुखी, अबिनासी की हाट ।
सनमुख होय सौदा करै, सहजहि खुलै कपाट ॥६७॥
अरँड आक अरु बाँस तरु, होता चंदन संग ।
गाँठ गँठीला थोथरा, पलटा नाहीं अंग ॥६८॥
उभय करम बंधन करै, नाम करै भय हान ।
दरिया ऐसे दास के, बरतै खैंचा तान ॥६९॥
दरिया दुखिया जब लगी, पञ्छा पञ्छी बेकाम ।
सुखिया जबही होयगा, राज निकंटा राम ॥७०॥
दृष्ट न मुष्ट न अगम है, अति ही करड़ा काम ।
दरिया पूरन ब्रह्म में, कोइ संत करै बिसराम ॥७१॥

॥ राग भैरो ॥

आदि अनादी मेरा साँई ॥ टेक ॥
दृष्ट न मुष्ट है अगम अगोचर, यह सब माया उनहीं माई ॥१॥
जो बन माली सींचै मूल, सहजै पिवै डाल फल फूल ॥२॥
जो नरपति को गिरह बुलावै, सेना सकल सहज ही आवै ॥३॥
जो कोई कर भान प्रकासै, तौ निस तारा सहजहि नासै ॥४॥
गरुड़ पंख जो घर में लावै, सर्प जाति रहने नहिं पावै ॥५॥
दरिया सुमिरै एकहि राम, एक राम सारै सब काम ॥६॥

जो सुमिरूँ तो पूरन राम ॥ टेक ॥
अगम अपार दार नहिं जा को, है सब संतन का बिसराम ॥१॥
कोट बिस्नु जा के अगवानी, संख चक्र सत सारँग पानी ॥२॥
कोट कारकुन ब्रिध कर्मधार, परजापति मुनि बहु बिस्तार ॥३॥
कोट काल संकर कोतवाल, भैरव दुर्गा धरम बिचार ॥४॥
अनंत संत ठाढ़े दरबार, आठ सिधि नौ निधि द्वारपाल ॥५॥

कोट बेद जा को जस गावै, बिद्या कोट जा को पार न पावै ॥६॥
कोट अकास जा के भवन दुवारे, पवन कोट जा के चँवर ढुरावै ॥७॥
कोट तेज जा के तपैं रमाय, बरुन कोट जा के नीर समाय ॥८॥
पृथी कोट फुलवारी गंध, सुरत कोट जा के लाया बंध ॥९॥
चंद सूर जा के कोट चिराग, लछमी कोट जा के राँधैं पाग ॥१०॥
अनन संत और खिनवनखाना, लख चौरासी पलै दिवाना ॥११॥
कोट पाप काँपैं बल-छीन, कोट धरम आगे आधीन ॥१२॥
सागर कोट जा के कलसधार, छपन कोट जा के पनिहार ॥१३॥
कोट सँतोष जा के भरा भंडार, कोट कुबेर जा के मायाधार ॥१४॥
कोट स्वर्ग जा के सुख रूप, कोट नर्क जा के अंध कूप ॥१५॥
कोट करम जा के उत्पतकार, किता कोट बरतावनहार ॥१६॥
आदि अंत मद्ध नहिं जा को, कोई पार न पावै ता को ॥१७॥
जन दरिया के साहब सोई, ता पर और न दूजा कोई ॥१८॥

- - -

जा के उर उपजी नहिं भाई। सो क्या जाने पीर पराई ॥टेक॥
ब्यावर जानै पीर की सार, बाँझ नार क्या लखै बिकार ॥१॥
पतिब्रता पति को ब्रत जानै, बिभचारिन मिल कहा बखानै ॥२॥
हीरा पारख जौहरी पावै, मूरख निरख के कहा बतावै ॥३॥
लागा घाव कराहै सोई, कोगतहार[1] के दर्द न कोई ॥४॥
राम नाम मेरा प्रान-अधार, सोई राम रस पीवनहार ॥५॥
जन दरिया जानैगा सोई, [जा के] प्रेम की भाल कलेजे पोई ॥६॥

जो धुनियाँ तौ भी मैं राम तुम्हारा।
अधम कमीन जाति मतिहीना,
तुम तो हौ सिरताज हमारा ॥ टेक ॥

(१) तमाशा करनेवाला।

काया का जंत्र सब्द मन मुठिया, सुषमन तांत चढ़ाई ।
गगन मंडल में धुनुआँ बैठा, मेरे सतगुर कला सिखाई ॥१॥
पाप पान हर[1] कुबुध काँकड़ा[2], सहज सहज झड़ जाई ।
घुंडी गाँठ रहन नहिं पावै, इकरंगी होय आई ॥२॥
इकरँग हुआ भरा हरि चोला, हरि कहै कहा दिलाऊँ ।
मैं नाहीं मेहनत का लोभी, बक्सो मौज भक्ति निज पाऊँ ॥३॥
किरपा कर हरि बोले बानी, तुम तौ हौ मम दास ।
दरिया कह मेरे आतम भीतर, मेलौ राम भक्ति बिस्वास ॥४॥

आदि अन्त मेरा है राम, उन बिन और सकल बेकाम ॥१॥
कहा करूँ तेरा बेद पुराना, जिन है सकल जगत भरमाना ॥२॥
कहा करूँ तेरी अनुभ बानी, जिन तें मेरी सुद्धि भुलानी ॥३॥
कहा करूँ ये मान बड़ाई, राम बिना सबही दुखदाई ॥४॥
कहा करू तेरा सांख और जोग, राम बिना सब बंधन रोग ॥५॥
कहा करूँ इन्द्रिन का सुक्ख, राम बिना देवा सब दुक्ख ॥६॥
दरिया कहै राम गुरमुखिया, हरि बिन दुखी राम सँग सुखिया ॥७॥

॥ राग पंचम ॥

पतिब्रता पति मिली है लाग,
जहँ गगन मँडल में परम भाग ॥ टेक ॥
जहँ जल बिन कँवला बहु अनंत ।
जहँ बपु[3] बिन भौंरा गोह[4] करंत ॥ १ ॥
अनहद बानी अगम खेल ।
जहँ दीपक जरै बिन बाती तेल ॥ २ ॥
जहँ अनहद सब्द है करत घोर ।
बिन मुख बोलै चात्रिक मोर ॥ ३ ॥

---

(१) पाप रूपा पत्ते दूर करके । (२) बिनौले । (३) शरीर । (४) गुंजार ।

बिन रसना गुन उदत नार।
पाँव बिन पातर[१] निरतकार ॥ ४ ॥
जहँ जल बिन सरवर भरा पूर।
जहँ अनंत जोत बिन चन्द सूर ॥ ५ ॥
बारह मास जहँ ऋतु बसंत।
ध्यान धरैं जहँ अनंत संत ॥ ६ ॥
त्रिकुटी सुखमन चुवत छीर।
बिन बादल बरखै मुक्ति नीर ॥ ७ ॥
अमृत धारा चलै सीर[२]।
कोइ पीवै बिरला संत धीर ॥ ८ ॥
ररंकार धुन अरूप एक।
सुरत गही उनही की टेक ॥ ९ ॥
जन दरिया बैराट चूर।
जहँ बिरला पहुँचै संत सूर ॥१०॥

* * *

चल चल रे हंसा राम सिंध।
बागड़[३] में क्या रह्यो बंध ॥ टेक ॥
जहँ निर्जल धरती बहुत धूर।
जहँ साकित बस्ती दूर दूर ॥ १ ॥
ग्रीषम[४] ऋतु में तपै भोम।
जहँ आतम दुखिया रोम रोम ॥ २ ॥
भूख प्यास दुख सहै आन।
जहँ मुक्ताहल नहिं खान पान ॥३॥
जउवा[५] नारू[६] दुखित रोग।
जहँ मैं तैं बानी हरप सोग ॥ ४ ॥

---

(१) वेश्या। (२) ठंडी। (३) सूखी धरती। (४) गरमी। (५) एक तरह के फोड़े।
(६) बीमारी का नाम।

माया बागड़[1] बरनी येह।
अब राम सिंध बरनूं सुन लेह ॥ ५ ॥
अगम अगोचर कथ्या ना जाय।
अब अनुभव माहीं कहूँ सुनाय ॥ ६ ॥
अगम पंथ है राम नाम।
गिरह बसौ जाय परम धाम ॥ ७ ॥
मान सरोवर बिमल नीर।
जहँ हंस समागम तीर तीर ॥ ८ ॥
जहँ मुक्ताहल बहु खान पान।
जहँ अवगत तीरथ नित सनान ॥ ९ ॥
पाप पुन्न की नहीं छोत।
जहँ गुरु सिष मेला सहज होत ॥ १० ॥
गुन इंद्री मन रहे थाक।
जहँ पहुँच न सके बेद बाक ॥ ११ ॥
अगम देस जहँ अभयराय।
जन दरिया सुरत अकेली जाय ॥ १२ ॥

* * *

चल सूवा तेरे आद राज।
पिंजरा में बैठा कौन काज ॥ टेक ॥
बिल्ली का दुख दहै जोर, मारे पिंजरा तोर तोर ॥१॥
मरने पहले मरो धीर, जो पाछे मुक्ता सहज छीर ॥२॥
सतगुर सब्द हृदे में धार, सहजाँ सहजाँ करो उचार ॥३॥
प्रेम प्रवाह धसै जब आभ, नाद प्रकासै परम लाभ ॥४॥
फेर गिरह बसावो गगन जाय, जहँ बिल्ली मृत्यु न पहुँचै आय ॥५॥
आम फलै जहँ रस अनंत, जहँ सुख में पावो परम तंत ॥६॥

(१) सूखी धरती।

झिरमिर झिरमिर बरसै नूर, बिन कर बाजै ताल तूर ॥७॥
जन दरिया आनद पूर, जहँ बिरला पहुँचै भाग भूर ॥८॥

* * *

॥ राग बिहगड़ा ॥

नाम बिन भाव करम नहिं छूटै ॥ टेक ॥
साध संग और राम भजन बिन, काल निरंतर लूटै ॥१॥
मल सेती जो मल को धोवै, सो मल कैसे छूटै ॥२॥
प्रेम का साबुन नाम का पानी, दोय मिल ताँता टूटै ॥३॥
भेद अभेद भरम का भाँडा, चौड़े पड़ पड़ फूटै ॥४॥
गुरमुख सब्द गहै उर अंतर, सकल भरम से छूटै ॥५॥
राम का ध्यान तू धर रे प्रानी, अमृत का मेंह बूटै ॥६॥
जन दरियाव अरप दे आपा, जरा मरन तब टूटै ॥७॥

* * *

दुनियाँ भरम भूल बौराई ।
आतम राम सकल घट भीतर, जा की सुद्ध न पाई ॥टेक॥
मथुरा कासी जाय द्वारिका, अरसठ तीरथ न्हावै ।
सतगुर बिन सोधा नहिं कोई, फिर फिर गोता खावै ॥१॥
चेतन मूरत जड़ को सेवै, बड़ा थूल मत गैला[1] ।
देह अचार किया कहा होई, भीतर है मन मैला ॥२॥
जप तप संजम काया कसनी, सांख जोग ब्रत दाना ।
या तें नहीं ब्रह्म से मेला, गुन हर करम बँधाना ॥३॥
बकता होय होय कथा सुनावै, स्रोता सुन घर आवै ।
ज्ञान ध्यान की समझ न कोई, कह सुन जनम गँवावै ॥४॥
जन दरिया यह बड़ा अचंभा, कहे न समझै कोई ।
भेड़ पूँछ गहि सागर लाँघै, निस्चय डूबै सोई ॥५॥

* * *

मैं तोहि कैसे बिसरूँ देवा।
ब्रह्मा बिस्नु महेसुर ईसा, ते भी बंछैं सेवा ॥ टेक ॥
सेस सहज मुख निस दिन ध्यावै, आतम ब्रह्म न पावै।
चाँद सूर तेरी आरति गावैं, हिरदय भक्ति न आवै ॥१॥
अनंत जीव जा की करत भावना, भरमत बिकल आयाना।
गुरु परताप अखँड लौ लागी, सो तेहि माहिं समाना ॥२॥
बैकुंठ आदि सो अँग माया का, नरक अंत अँग माया।
पारब्रह्म सो तो अगम अगोचर, कोइ बिरला अलख लखाया ॥३॥
जन दरिया यह अकथ कथा है, अकथ कहा क्या जाई।
पंछी का खोज मीन का मारग, घट घट रहा समाई ॥४॥

* * *

जीव बटाऊ रे बहता भाई मारग माईं।
आठ पहर का चालना, घड़ी इक ठहरै नाईं ॥१॥
गरभ जन्म बालक भयो रे, तरुनाये गर्भान।
बृद्ध मृतक फिर गर्भ बसेरा, [तेरा] यह मारग परमान ॥२॥
पाप पुन्न सुख दुख की करनी, बेड़ी थारे लागी पाँय।
पंच ठगों के बस पड़्यो रे, कब घर पहुँचे जाय ॥३॥
चौरासी बासो बस्यो रे, अपना कर कर जान।
निस्चय निस्चल होयगो रे, पद पहुँचे निर्बान ॥४॥
राम बिना तो को ठौर नहीं रे, जहँ जावै तहँ काल।
जन दरिया मन उलट जगत सूं, अपना राम सम्हाल ॥५॥

॥ राग सोरठ ॥

है कोइ संत राम अनुरागी,
जा की सुरत साहब से लागी ॥ टेक ॥
अरस परस पिव के सँग राती, होय रही पतिब्रता।
दुनिया भाव कछु नहिं समझै, ज्यों समुँद समानी सलिता ॥२॥

मीन जाय कर समुंद समानी, जहँ देखै जहँ पानी।
काल कीर का जाल न पहुँचे, निर्भय ठौर लुभानी ॥३॥
बावन चंदन भौंरा पहुँचा, जहँ बैठे तहँ गंधा।
उड़ना छोड़ के थिर हो बैठा, निस दिन करत अनंदा ॥४॥
जन दरिया इक राम भजन कर, भरम बासना खोई।
पारस परस भया लोह कञ्चन, बहुर न लोहा होई ॥५॥

* * *

साधो राम अनूपम बानी।
पूरा मिला तो वह पद पाया, मिट गइ खैंचा तानी ॥टेक॥
मूल चाँप दृढ़ आसन बैठा, ध्यान धनी से लाया।
उलटा नाद कँवल के मारग, गगना माहिं समाया ॥१॥
गुरु के सब्द की कूंची सेती, अनंत कोठरी खोली।
भ्रू लोक पर कलस बिराजे, ररंकार धुन बोली ॥२॥
जहँ बसत अगाध अगम सुख सागर, देख सुरत बौराई।
वस्तु घनी पर बरतन ओछा, उलट अपूठी आई ॥३॥
सुरत सब्द मिल परचा हूआ, मेरु मद्ध का पाया।
ता में पैस गगन में आया, वहँ जाय अलख लखाया ॥४॥
जहँ पग बिन पातर कर बिन बाजा, बिन मुख गावैं नारी।
बिन बादल जहँ मेंह बरसै है, ढुमक ढुमक सुख क्यारी ॥५॥
जन दरियाव प्रेम गुन गाया, वहँ मेरा अरट चलाया।
मेरु डंड होय नाल चली है, गगन बाग जहँ पाया ॥६॥

* * *

साधो ऐसी खेती करई, जासे काल अकाल न मरई ॥टेक॥
रसना का हल बैल मन पवना, बिरह भोम तहँ बाई।
राम नाम का बीजा बोया, मेरे सतगुर कला सिखाई ॥१॥

ऊगा बीज भया कुछ मोटा, हिरदा में डहडाया[1]।
किया निदान[2] भरम सब खोया, जहँ प्रेम नीर बरखाया ॥२॥

नाभी माहिं भया कुछ दीरघ, पोटा सा दरसाना।
अर्ध कँवल में सिरा निकासा, गगन नाद गरजाना ॥३॥

मेरु डंड होय डाँडी निकसी, ता ऊपर परकासा।
बीज बुवा था बिरह भोम में, फल लागा आकासा ॥४॥

परथम जहाँ संख धुन उपजी, मन की अति रति जागी।
गाजै गगन सुधा रस बरसै, नौबत बाजन लागी ॥५॥

त्रिकुटी चढ़ा अनंत सुख पाया, मन की ऊनत[3] भागी।
ऊँचे ज्ञान ध्यान सत बरतै, जहाँ सुषमना चूने लागी ॥६॥

चढ़ आकास सकल जग देखा, जुगती थी सो जानी।
सम्पत मिली बिपत सब भागी, ब्रह्म जोत दरसानी ॥७॥

जम गया दूध ब्रह्म कन निरजा, सुरत अवेरनहारी[4]।
हुई रास[5] तब बरतन लागा, आनँद उपजा भारी ॥८॥

निरजा नाज भवन भर राखा, ता मध सुरत समाई।
जन दरिया निर्भय पद परसा, तहँ काल न पहुंचे आई ॥९॥

* * *

बाबल कैसे बिसरा जाई।
जदि मैं पति सँग रल खेलूंगी, आपा धरम समाई ॥टेक॥

सतगुर मेरे किरपा कीनी, उत्तम बर परनाई[6]।
अब मेरे साँईं को सरम पड़ैगी, लेगा चरन लगाई ॥२॥

थे[7] जानराय मैं बाली भोली, थे[7] निर्मल मैं मैली।
थे बतलाएं मैं बोल न जानूँ, भेद न सकूं सहेली ॥३॥

---

(१) लहलहाया। (२) निराव। (३) तपन। (४) जमा करनेवाली। (५) खलयान।
(६) ब्याह कराया। (७) तुम।

थे ब्रह्म भाव में आतम कन्या, समझ न जानूं बानी ।
दरिया कहै पति पूरा पाया, यह निस्चय कर जानी ॥४॥

* * *

साधो मेरे सतगुर भेद बताया ।
ता से राम निकट ही पाया ॥टेक॥

मथुरा कृस्न औतार लिया है, घुरै निसाना धाई ।
ब्रह्मादिक सिव और सनकादिक, सब मिल करत बधाई ॥२॥
गगन मँडल में रास रचा है, सहस गोपि इक कंथा ।
सब्द अनाहद राग छतीसों, बाजा बजै अनंता ॥३॥
अकास दिसा इक हस्ती उलटा, राई मान दरवाजा ।
ता में होय गगन में आया, सुनै निरंतर बाजा ॥४॥
सर्प एक बासक उनिहारे, बिष तज अमृत पावै ।
कृस्न चरन में लोटै दीन होय, अमर जुगन जुग जीवै ॥५॥
जहँ इड़ा पिंगला राग उचारैं, चंदर सूर थकाना ।
बहती नदिया थिर होय बैठी, कलजुग किया पयाना ॥६॥
राधा हरि सतभामा सुंदर, मिली कृस्न गल लागी ।
अरस परस होय खेलन लागी, जब जाय दुबिधा भागी ॥७॥
आइ प्रतीत और भया भरोसा, भीतर आतम जागी ।
दरिया इकरँग राम नाम भज, सहज भया बैरागी ॥८॥

॥ राग गौरी ॥

साधो एक अचंभा दीठा ।
कड़वा नीम कहै सब कोई, पीवै जा को मीठा ॥टेक॥

बूंद के माहीं समुँद समाना, राई में परबत डोलै ।
चींटी के माहीं हस्ती बैठा, घट में अघटा आलै ॥१॥

कूंडा माहीं सूर समाना, चंद्र उलट गया राहू ।
राहु उलट कर तार समाना, भोम[1] में गगन समाऊ ॥२॥
त्रिन के भीतर अगिन समानी, राव रंक बस बोलै ।
उलट कपाल तिल माहिं समाना, नाज तराजू तोलै ॥३॥
सतगुर मिलैं तो अर्थ बतावैं, जीव ब्रह्म का मेला ।
जन दरिया वा पद कूं परसै, सो है गुर मैं चेला ॥४॥

* * *

अब मेरे सतगुर करी सहाई ।
भरम भरम बहु अवधि गँवाई,
मैं आपहि में थित पाई ॥टेक॥
हिरनी जाय सिंघ घर रोका, डरप सिंघनी हारी ।
सोता साह होय कर निर्भय, बस्तु करै रखवारी ॥२॥
अजगर उड़ा सिखर को डाँका, गरुड़ थकित होय बैठा ।
भोम[1] उलट कर चढ़ी अकासा, गगन भोम[1] में पैठा ॥३॥
सिंघ भया जाय स्याल अधीना, मच्छा चढ़ै अकासा ।
कुरम जाय अगना में सोता, देखै खलक तमासा ॥४॥
राजा रंक महल में पौढ़ा, रानी तहाँ सिधारी ।
जन दरिया वा पद को परसै, ता जन की बलिहारी ॥५॥

॥ राग किदारा ॥

मुरली कौन बजावै हो, गगन मँडल के बीच ॥टेक॥
त्रिकुटी संगम होय कर, गंग जमुन के घाट ।
या मुरली के सब्द से, सहज रचा बैराट ॥१॥
गंग जमुन बिच मुरली बाजे, उत्तर दिस धुन होय ।
उन मुरली की टेरहि सुनि सुनि, रहीं गोपिका मोहि ॥२॥

---

(१) भूमि, जमीन ।

जहँ अधर डाली हंसा बैठा, चूगत मुक्ता हीर ।
आनँद चकवा केल करत है, मानसरोवर तीर ॥३॥
सब्द धुन मिर्दंग बाजै, बारह मास बसंत ।
अनहद ध्यान अखंड आतुर, धरत सबही संत ॥४॥
कान्ह गोपी नृत्य करते, चरन बपु[1] हि बिना ।
नैन बिन दरियाव देखे, अनंद रूप घना ॥५॥

॥ राग भैरो ॥

कहा कहूँ मेरे पिउ की बात,
जो रे कहूँ सोइ अंग सुहात ॥टेक॥
जब मैं रही थी कन्या क्वारी,
तब मेरे करम हता सिर भारी ॥१॥
जब मेरी पिउ से मनसा दौड़ी,
सतगुरु आन सगाई जोड़ी ॥२॥
तब मैं पिउ का मंगल गाया,
जब मेरा स्वामी ब्याहन आया ॥३॥
हथलेवा दे बैठो संगा,
तब मोहिं लीनी बाँये अंगा ॥४॥
जन दरिया कहै मिटगइ दूती,
आपो अरप पीव सँग सूती ॥५॥

* * *

ऐसे साधू करम दहै ।
अपना राम कबहुँ नहिं बिसरै,
बुरी भली सब सीस सहै ॥टे
हस्ती चले भूँसै बहु कूकर, ता का औगुन उर न ग
वा की कबहुँ न मन नहिं आनै, निराकार की ओट

(१) शरीर ।

धन को पाय भया धनवंता, निरधन मिल उन बुरा कहै।
वा की कबहुँ न मन में लावै, अपने धन सँग जाय रहै ॥२॥
पति को पाय भई पतिब्रता, [वा की] बहु बिभचारिन हाँस करै।
वा के संग कबहुँ नहिं जावै, पति से मिल कर चिता जरै ॥३॥
दरिया राम भजै जो साधू, जगत भेख उपहाँस करै।
वा का दोष न अंतर आनै, चढ़ नाम जहाज भवसागर तरै ॥४॥

॥ राग बिलावल ॥

राम भरोसा राखिये, ऊनित[1] नहिं काई[2]।
पूरन हारा पूरसी, कलपै मत भाई ॥टेक॥
जल दिखै[3] आकास से, कहो कहँ से आवै।
बिन जतना ही चहुँ दिसा, दह[4] चाल चलावै ॥१॥
चात्रिक भूजल ना पिवै, बिन अहार न जीवै।
हर वाही को पूरवै, अंतर गत पीवै ॥२॥
राज हंस मुक्ता चुगै, कुछ गाँठ न बाँधै।
ता को साहब देत है, अपनो ब्रत साधै ॥३॥
गरभ बास में आय कर, जिव उद्दम न करही।
जानराय जानै सबै, उनको वहिं भरही ॥४॥
तीन लोक चौदह भवन, करै सहज प्रकासा।
जा के सिर समरथ धनी, सोचै क्या दासा ॥५॥
जब से यह बानक बना, सब समझ बनाई।
दरिया बिकलप मेट के, भज राम सहाई ॥६॥

* * *

साहब मेरे राम हैं, मैं उनकी दासी।
जो बान्या सो बन रहा, आज्ञा अबिनासी ॥टेक॥
अरधउरध बिच कँवल बिच, करतार छिपाया।
सतगुर मिल किरपा करी, कोइ बिरले पाया ॥१॥

(१) घाटा। (२) काई। (३) टपके। (४) बहाकर।

तीन लोक चौदह भवन, केवल भरपूरा ।
हाजिराँ से हाजिर सदा, दूराँ से दूरा ॥२॥
पाप पुन्न दोउ रूप हैं, उनहीं की माया ।
साधन के बरतन सदा, भरमै भरमाया ॥३॥
जन दरिया इक राम भज, भजबे की बारा ।
जिन यह भार उठाइया, उनके सिर भारा ॥४॥

॥ राग गुंड ॥

अमृत नीका कहै सब कोई,
पीये बिना अमर नहिं होई ॥१॥
कोइ कहै अमृत बसै पताल,
नर्क अंत नित ग्रासै काल ॥२॥
कोइ कहै अमृत समुँदर माँहि,
बड़वा अगिन क्यों सोखत ताहि ॥३॥
कोइ कहै अमृत ससि में बास,
घटै बढ़ै क्यों होइहै नास ॥४॥
कोइ कहै अमृत सुरगाँ माहिं,
देव पियें क्यों खिर खिर जाहिं ॥५॥
सब अमृत बातों की बात,
अमृत है संतन के साथ ॥६॥
दरिया अमृत नाम अनंत,
जा को पी पी अमर भये संत ॥७॥

॥ राग विहंगड़ा ॥

साधो अरट वहै घट माहीं ।
जो देखा ताही को दरसै, आदि अंत कछु नाहीं ॥टेक॥
अरघ उरध विच्च अमृत कूवा, जल पीवै कोइ दासा ।
उलटी माल गगन को चाली, सहज भरै आकासा ॥१॥